अध्याय 1

परम्परा और आधुनिकता

भूमिका :

प्रकृति और मानव का घनिष्ठ संबंध है। प्रकृति का सबसे बड़ा वरदान मानव है। प्रकृति का स्वाभाविक गुणधर्म परिवर्तनशीलता है। दिन-रात में, रात-दिन में परिवर्तित होते हैं। ऋतुएँ बदलती रहती हैं। ये परिवर्तन सहजात हैं, लेकिन मनुष्य अपने जीवन में बुद्धि, विचार, भावना तथा परिस्थिति के अनुसार अपने आचार-विचार, रहन-सहन आदि को परिवर्तित करता रहा है। वास्तव में परिवर्तन ही जीवन है। परिवर्तन एक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया के अनुसार हम "परंपरा" और "आधुनिकता" शब्दों का व्यवहार में इस्तेमाल करते हैं। "परंपरा" से सामान्यत: अतीत का बोध होता है लेकिन परंपरा पूरी तरह से अतीत का चित्र नहीं है। अतीत का कुछ निरंतर निखरता-छाँटता-बदलता रूप ही "परंपरा" है। "परंपरा" की अगली कड़ी "आधुनिकता" है। मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी है। अत: अपनी बुद्धि के द्वारा, तर्क के द्वारा वह कुछ सोच-विचार करता रहता है और जीवन-मूल्यों को नये सिरे से देखता है। यह नयी दृष्टि ही वास्तव में "आधुनिकता" है। मानव जीवन में "परंपरा" और "आधुनिकता" दोनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव के क्रिया-व्यापार में "परंपरा" और "आधुनिकता" दोनों का योगदान है। इसी कारण "परंपरा" और "आधुनिकता" में परस्पर विरोध नहीं है वे एक-दूसरे के पूरक ही हैं।

परंपरा : अर्थबोध और अर्थविस्तार :

"परंपरा" शब्द का अर्थ कई विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से किया है। हिन्दी में प्रस्तुत "परंपरा" शब्द संस्कृत से व्युत्पन्न हुआ है। इस शब्द की व्युत्पत्ति "परम् = पृ+अच+टाप्"[1]

इस प्रकार बताई गई है। "संस्कृत हिन्दी शब्द कोश" मे "परंपरा" शब्द के अर्थ बताए गए हैं - अविच्छिन्न शृंखला, नियमित सिलसिला"इ.[2] "मानक हिन्दी कोश" में "परंपरा" शब्द के अर्थ निम्नलिखित हैं- "1. वह व्यवहार जिसमें पुत्र पिता की, वंशज पूर्वजों की और नई पीढ़ीवाली पुरानी पीढ़ीवालों की देखा-देखी उनके रीति-रिवाजों का अनुकरण करते हैं। 2. वह रीति-रिवाज जो बड़ों, पूर्वजों या पुरानी पीढ़ीवालों की देखा-देखी किया जाय। 3. नियम या विधान में से भिन्न अथवा अनुल्लिखित वह कार्य जो बहुत दिनों से एक ही रूप में होता चला आ रहा हो और इसीलिए जो सर्वमान्य हो।"[3] अंग्रेजी में परंपरा के लिए "ट्रैडिशन" (Tradition) शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसके अर्थ हैं - "1, एक का दूसरे को, दूसरे का तीसरे को दिया जानेवाला क्रम 1, 2. किसी जानकारी, अभिमत रीति-रिवाज आदि का एक से दूसरे को क्रमायत सौंप देना। 3. अलिखित ईश्वरप्रदत्त कानून" इ.।[4]

" THE READER'S DIGEST GREAT ENCYCLOPAEDIC DICTIONARY.VOLUMES!" में "ट्रेडिशन" के अर्थ "अलिखित या मौखिक विधान, विश्वास रीति-रिवाज आदि का एक से दूसरे को सौंप देना,"[5] दिए गए हैं। "ऑक्सफोर्ड एडवान्सड लर्नर्स डिक्शनरी ऑफ करण्ट इंग्लिश" में "ट्रैडिशन" का अर्थ है- एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को सौंप देना या सौंप दिया गया।"[6] "मानक अंग्रेजी कोश" के अनुसार "ट्रैडिशन" के अर्थ इस प्रकार दिए गए हैं 1)" परम्परा का एक पीढी से दूसरी पीढी तक पहुँचना, 2) धर्मशास्त्र, दैवी सिध्दान्त जो लिखे न गये हो, 3) साहित्य-परम्परा,कला-परम्परा, 4) (विधि) सुपुर्दगी, विधिवत हवाले करना"[7] आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार "परंपरा जीवंत प्रक्रिया है, जो अपने परिवेश के संग्रह-त्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर क्रियाशील रहती हैं।"[8] अतः मानव परम्पराशील जीवन जीते हुए आधुनिकता की ओर आकृष्ट होता है। वह हर युग में नये मूल्यों का निर्माण करता हैं और पुराने मूल्यों को मिटाने की कोशिश करता हुआ उसे परम्परा की दृष्टिसे देखता हैं। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में परम्परा के कई रूप दिखाई देते हैं। उसमें परानी रूढियाँ, प्रथाएँ और प्रणालियों का अनुकरण करना पूर्व काल से ही चला आया हैं। मानव प्राणी उन रूढियों को और प्रणालियों को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार स्वीकारता हैं, जो परम्परा के क्षेत्र में समाविष्ट हो जाती हैं।

आज परम्परा तथा रूढियोंका और समाजचलित प्रणालियों का कई पध्दतियों से परिक्षण या अध्ययन किया जा रहा हैं जिसके विभिन्न कोण हैं। इसे राजनीतिक, सामाजिक, सांकस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक जैसे विभिन्न पार्श्वों में देखा - परखा जा सकता है। वैसे तो परम्परा प्रायः जातीय रूप से आपना स्वरूप ग्रहण करती है, इसमें सारी विभिन्नताएँ सम्मिलित हुई दिखाई देती हैं।

इस प्रकार समाज की जातीय व्यवस्था, संस्कृति, साम्प्रदायिक आचार – विचारों में ही रूढि तथा परम्परा का तत्त्व छिपा होता हैं। पाश्चात्य विचारवंत टी.एस. ईलियट के अनुसार जिनसे पारम्पारिक समानता और आत्मीयता स्थापित होती है, वे स्वभाव, स्वाभाविक कार्य, सामाजिक प्रथाएँ, धार्मिक विधियाँ अभिवादन करने की प्रणालियाँ – सब परम्परा के अन्तर्गत हैं। इतना ही नहीं "टी.एस. इलियट की दृष्टि में " परम्परा की व्यापक अर्थवत्ता है। उसे दाय या विरासत के रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता, उसकी प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम आवश्यक है।[9] जिसमें मानव निर्मित सामाजिक मूल्य और उसके प्रति समाज की अन्तर्भावनाएँ भी आ जाती हैं।

अतः किसी युगमें मानव निर्मित नव मूल्यों का आज के वर्तमान युग में पुराने ढंग से देखते हुए उसे अस्वीकृत करना – "परम्परा" हैं। बल्कि अर्थबोध और अर्थविस्तार की दृष्टि से देखा जाय तो "परम्परा" एक ऐसी ईंट है जिसपर आधुनिकता की इमारत खडी हो जाती हैं, साथ ही साथ "परम्परा" जो एक ऐसा खंडहर है जो अपनी प्राचीन मान्यताएँ तथा रूढियों की साक्ष देता हैं, उसी तरह "परम्परा" एक ऐसी अमर–आत्मा है जिसका अंत कभी नहीं होता और न ही कभी होनेवाला हैं।

परम्परा : स्वरूप – निर्धारण

(अ) परम्परा और अतीत

परम्परा के स्वरूप निर्धारण में सर्वप्रथम "अतीत" का विचार करना आवश्यक हैं। अतीत काल – बोध का द्योतक है लेकिन परम्परा अतीत का अंश हैं। परम्परा का प्रत्यक्ष सम्ग्र अतीत से जुडा है, उसकी दृष्टि अतीत के ओर ही रहती है। परम्परा का अतीत से सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि – "परम्परा योग्य पिता का अयोग्य– अकर्मण्य पुत्र है।"[10] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार परम्परा एक गतीशील प्रक्रिया है लेकिन उसकी अपनी विशिष्टता है। परम्परा से हमें समूचा अतीत नहीं प्राप्त होता बल्कि उसका कटा–छँटा परिवर्तित रूप प्राप्त होता है। किसी भी देश की भाषा वहाँ के लोगों को परम्परा से प्राप्त होती है। अगर हिन्दी का उदाहरण दिया जाय तो वह आज न वैदिक युग की भाषा है, न अपभ्रंश युग की, इतना ही नहीं, वह आज से कुछ साल पहले की भी नहीं है। वह काल – प्रवाह में बहती हुई भाषा है। हमारी बोलने – लिखने की पध्दति, सरलता की ओर देखने की दृष्टि आदि के कारण हमारी हिन्दी भाषा में भी परिवर्तन हुआ है, उसमें कुछ पुराने शब्द छुट गए हैं और नए शब्द जुड गए हैं। इस प्रकार भाषा में परिवर्तन होता रहता हैं। यहीं स्थिति समस्त आचार – विचारों के क्षेत्र में देखी जाती हैं. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि

कभी कभी परम्परा को गलत ढंग से अतीत के सभी आचार - विचारों का बोधक माना जाता है। उनका मत है कि " परम्परा का अर्थ विशुध्द अतीत नहीं है बल्कि एक निरंतर गतिशील जीवंत प्रक्रिया है।" [11]

मानव जीवन में जो कुछ घटित होता है उसे सामान्यतः इतिहास कहा जाता है। इतिहास शब्द का अर्थ ही जो कुछ "घटित हुआ" वह इतिहास है। लेकिन इतिहास में जो कुछ घटित होता है वह सब का सब परम्परा नहीं बन सकता। इतिहास का कुछ विशिष्ट अंश परम्परा बन पाता है जो जीवंत होता है तथा मानव की उन्नति के लिए सहायक होता है। इसलिए "परम्परा इतिहास नहीं है, इतिहास देवता की यात्रा का आखिरी पडाव है"[12] इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि परम्परा अतीत या इतिहास से संबंधित होकर भी वह पूरी तरह से न वह अतीत है न इतिहास।

टी.एस.इलियट का कथन समीचीन ही है — "परम्परा की पहचान के लिए इतिहास बोध की आवश्यकता है। इतिहास बोध का अर्थ अतीत के अतीतत्त्व का ही नहीं अपितु, उसके वर्तमानत्त्व का भी अवगम है।"[13] यह इतिहासबोध ही कालातीत (Timeless) कालिक (Temporal) का युगपत्‌बोध है। अतः परम्परामें इतिहास के सजीव का अंश ही विद्यमान रहता है।

(आ) परम्परा और सम्प्रदाय

कभी कभी परम्परा को सम्प्रदाय का बोधक माना जाता है तथापि वास्तवता यह है कि इन दोनों में वैचारिक दृष्टि से सूक्ष्म अंतर है। कभी कभी मनुष्य अपने विशिष्ट प्रकार के आचार - विचारों को ज्यों का त्यों सुरक्षित रखने का प्रयास करता हैं। इस प्रयास में वह कितना सफल होता है यह बताना कठीन है। वास्तव में गुरु परम्परा से प्राप्त विशुध्द आचार - विचारों का संरक्षण ही सम्प्रदाय है। नाथ सम्प्रदाय, वैष्णवसम्प्रदाय, रूद्रसम्प्रदाय, सखी सम्प्रदाय आदि इस कार्य के अंतर्गत आते हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि सम्प्रदाय में गुरु प्रदत्त आचार - विचारों का संरक्षण प्रयत्न पूर्वक किया जाता है। इसके विपरीत परम्परा स्वभाविक गतिशील प्रक्रिया है। संक्षेप में "परम्परा सहज है, सम्प्रदाय प्रयत्नसिध्द।"[14] ये दोनों तत्वतः एक दूसरे के विरोधी न होकर भी इन दोनों मे यह सूक्ष्म अंतर है।

(इ) परम्परा और रूढि – प्रियता

संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है उसी तरह परम्परा भी समाज, संस्कृति, परिस्थितियाँ, कालानुसार परिवर्तित होती है। समाज के अंतर्गत मानव के निजी जीवन को परम्परा के निकष पर परखा जाता है क्योंकि परम्परा की रक्षा और विकास करना सामंती सभ्यता का एक विशिष्ट अंग माना जाता है। यह सामंती सभ्यता अपने रूढि – प्रिय विचारों से परम्परा को विकसित करती है। जिसके कारण परम्परा जीवित रहती है और उसकी व्यापकता समाज में बढती रहती है। ऐसी परम्परा को तोडना उतना आसान नही बल्कि परिवर्तित होकर रूढियों के रूप में विकसित और प्रसारित होना सम्भव रहता है। इसलिए प्रतिभा – सम्पन्न मानव परम्परा में नए तत्वों का विकास ढूंढते हुए प्राचीन तत्वों का नाश करने की कोशिश करता है, फिर भी परम्परा जीवित रहती है, क्योंकि समाज में कुछ रूढि– प्रियता का बंवडर रहता है। आज के वैज्ञानिक युग में भी दैवी – शक्ति और भूत – पिशाच के अस्तित्व पर भरोसा रखनेवाले कई अनुयायी हमारे अनुभवमें आते हैं। उनकी इसी प्रवृत्ति को रुढि – प्रियता माना जाता है जिसके कारण उनके मन में परम्परा के प्रति आस्था जाग्रत रहती है क्योंकि "परम्परा एक विचार से दूसरे विचार में धीरे – धीरे स्थानान्तरण करती है। क्योंकि परम्परा की नींव आस्था और निष्ठा पर टिकी है। व्यक्ति की आस्था जल्दी नहीं टूटती । क्योंकि मनुष्य का दैवी दृष्टिकोण परम्परा को पवित्र और शुध्द घोषित करता है।"[15] वास्तव में सामान्यतया रूढि – प्रियता तो परम्परा से भी बढ़कर है क्योंकि सामाजिक परम्परा सामान्यतया आसानी से तोडी जाती है मगर धर्मान्धता पूर्ण परम्परा इतनी आसानीसे तोडी नहीं जाती, यही धर्मान्धता मनुष्य के मन में रूढि – प्रियता के रूप में स्थित होती है जिससे सामाजिक लाभ तो नहीं होता बल्कि हानि जरूर हो सकती है क्योंकि परम्परा मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन उसमें जो रूढियों की आस्था है वह मानव – विकास के लिए अवांछनीय है। मानव विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक वह अपने रूढियों को तोडकर फेंक नहीं सकता। वस्तुतः मानव जीवन के लिए रूढि – प्रियता उपयोगी नहीं है। इसीलिए प्रगतिशील जीवन जीने के लिए मानव को अपनी रूढि – प्रियता से मुक्त होकर चलना होगा।

किन्तु संस्कृति मानव निर्मित है, जिसका निर्माता मानव है। अतः मानव के क्रिया व्यापार मूलतः संस्कृति के अंतर्गत आते हैं जो संस्कारक्षम होते हैं। समूचे विश्व में देश काल और परिस्थिति के अनुसार अनेक संस्कृतियों का निर्माण हुआ है और एक संस्कृती का दूसरी संस्कृती पर कुछ न कुछ मात्रा में प्रभाव पडता है। हमारा भारतवर्ष अनेक संस्कृतियों का संगम है और इसी कारण रूढि – प्रियता और परम्परा में कालसापेक्ष परिवर्तन होता रहा है। "इस प्रकार रूढियों और परम्परा में निरंतर नवीनता आती रहती है।"[16] तथापि रूढि – प्रियता परम्परा में समुचित विकास के लिए

उपयुक्त नहीं है क्योंकि अधिकतर रूढियाँ कालान्तर में समाजविघातक साबित हुई हैं।

(ई) परम्परा और अंधश्रध्दा

परम्परा का और एक निहित तत्त्व है अंधश्रध्दा जो मानव जीवन और जगत को परम्परा और रूढि - प्रियता के मूल्यों में बाँध देता है। अंधश्रध्दा परम्परा का एक ऐसा अंग है जिसमें मूलतः अमानवीय विचारोंपर श्रध्दा रखी जाती है। जैसे कि सारे प्रकृति का सृष्टा या निर्माता भगवान है तथा मानव द्वारा किए गए पाप और पुण्य का हिसाब देवताओं के दरबार में देना पडता है, आदि अंधश्रध्दा के तत्त्व है। अंधश्रध्दा में मानव के कार्य का कोई महत्त्व नहीं है, तो महत्त्व है उनके नसीब का जो ऊपरवालेने लिखा है। आज के वर्तमान युगमें भी कई लोग उसे अपनाते हुए उसका अनुकरण करते हैं। जैसे कि घरमें कोई बीमार पडा हो तो उसे डॉक्टर के पास ले जाने के बजाय किसी मंदिर में या किसी मांत्रिक के पास जानेवाले लोग हम आज भी देखते हैं। इसी तरह मृत - आत्मा का अस्तित्त्व माननेवाले लोग झूठ-मूठ की कहानियाँ औरों को सुनाते हैं। वस्तुतः वे लोग औरों के मन में अंधश्रध्दा को प्रतिम्बिबित करने का प्रयत्न करते हैं। जिसका प्रतिरूप इस वर्तमान युगमें भी दिखाई देता है। जैसे कि अंतराल में छोडे जानेवाले यानों की भी पूजा की जाती है ताकि वे अपने कार्य में सफल हो जाए, या हवाई-जहाज से परदेश जानेवाला अपना बेटा सहीसलामत वापस आनेके लिए भगवान से प्रार्थना की जाती हैं। इसे आज के वैज्ञानिक युग में अंधश्रध्दा कहा जाता है। सतीप्रथा, देवदासी प्रथा, संतान ईश्वर की देन है आदि उदा. है। अतः अंधश्रध्दा में मानव अज्ञात दैवी शक्ति पर विश्वास रखता है। कर्म पर विश्वास रखने के बजाय नसीब पर या भगवान पर विश्वास रखता है। क्योंकि वही उसका दाता है, विधाता है, निर्माता है और संहार कर्ता है। इसी तरह परम्परा के अन्तर्गत अन्धश्रध्दा भी कभी - कभी छिपी रहती है, परंतु मानव बुध्दि और तर्क तथा अपने कार्य पर भरोसा रखकर अन्धश्रध्दा को मिटाने का प्रयास कर रहा है और परम्परा को आवश्यकता के अनुसार विकसित भी कर रहा है।

आधुनिकता : अर्थ और अर्थविस्तार

आजकल "आधुनिकता" शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। बीसवीं शताब्दी का सबसे विवादास्पद और बहुचर्चित शब्द - "आधुनिकता" है। "आधुनिकता" की संज्ञा "आधुनिक" विशेषण से बनी है। "आधुनिक" शब्द संस्कृत के "अधुना+ठअ+इक"[17] से व्युत्पन्न हुआ है। "आधुनिक" शब्द अंग्रेजी के "मॉडर्न" (Modern) शब्द का हिन्दी रूपांतर है। अंग्रेजी में

"मॉर्डर्न" शब्द के कई, अर्थ प्राप्त होते हैं, जैसे- 1) सम्प्रति या इस समय, (2) नवीन या अद्यतन"[18] "मानक अंग्रेजी- हिंदी कोश" में मॉडर्न (Modern) शब्द के अर्थ इस प्रकार दिए गए हैं। 1) आधुनिक, अर्वाचीन, वर्तमान अथवा आधुनिक समय का आकलन का, 2) नया, नये युग का, नये जमाने का 3) नये ढंग का, नूतन 4) आधुनिक परिपाटियों पर चलनेवाला, नए फैशन का, नवयुगीन। आधुनिक काल का व्यक्ति।"[19] इस तरह अंग्रेजी "मॉडर्न" शब्दार्थ में आधुनिक का सम्बन्ध स्पष्ट किया है। इनसे सामान्यतः ऐसा ज्ञान होता है कि कोई ऐसी ऐतिहासिक शक्ति (मूल्य, प्रवृत्ति) को उसकी पारम्पारिक स्थितियों से अलग हटाती हुई जान पडती है। उस अलग हुई शक्ति को ही साधारणतः "आधुनिकता" माना जा सकता है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में पद्य की अपेक्षा गद्य आधुनिक है। वैसे तो हिन्दी साहित्य में सन 1960 ई. के बाद से " "आधुनिकता" शब्द का विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होने लगा। हिन्दी साहित्य में चलनेवाले इस आन्दोलन में सार्त्र, कामू, काफ्का आदि की विचारधाराओं की प्रेरणा ली गयी है। इन विचारकों के अनुसार आज का मानव अनवरत चिन्ता से ग्रस्त है। वैसे तो आधुनिकता के इस युग में मानव द्वारा विचार किए जानेवाले किसी भी विषय के लिए इस अर्थ से मुक्त होना संभव नहीं है। इसलिए आज विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं, विश्व- विद्यालयों तथा विद्वानों को " आधुनिकता" का अर्थ और अभिप्राय स्पष्ट करने के लिए मंच-निर्माण वाद-विवाद तथा लेखन-प्रलेखनकी आवश्यकता पड़ रही है। इस तरह आधुनिकता का यह आन्दोलन जितना प्रबल हो रहा है उतना ही उलझता भी जा रहा है क्योंकि हर क्षेत्र में आधुनिकता से उत्पन्न क्षणवाद की नये सिरे से स्थापना हो रही है और मानव के जीवन पर उसका प्रभाव अनिवार्य और अपरिहार्य बना हुआ दिखाई देता है। डॉ. नगेन्द्र का कथन इस संबंध में उचित ही है कि "आधुनिक " का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक ही मानना चाहिए। युगबोध, परम्परा का संशोधन, जीवन के वैविध्य की स्पृहा, अपने पर्यावरण के माध्यम से आत्मसिद्धि- विकास की आकांक्षा आदि ही उसके सही लक्षण हैं।"[20]

वस्तुतः बीते हुए दिनों को या बीती हुई घटनाओं को हम इतिहास कहते हैं मगर उस इतिहास के लिए "आधुनिक" शब्द का प्रयोग करना उचित नहीं लगता किन्तु अगर यही घटनाएँ कालक्रम की दृष्टि से देखी जाएंगी तो हर घटना अपने- अपने युगमें आधुनिक ही होती है। वैसे तो मानव का जन्म उस समय हुआ था जब वह अपने देशकाल के प्रति, अपने युग और इतिहास के प्रति सुज्ञात हुआ है। इसी कारण उसमें कल्पना और आदर्श का आकर्षण कम हो गया है। मानव की यह दिशा देशकाल के समानान्तरगामी होने के कारण वस्तु-सापेक्ष बन गयी है तथा सदैव परिवर्तन या संशोधनशील है। बल्कि " आधुनिकता का स्वरूप जो कल था, वह आज हो, जो आज है, वह कल भी हो यह

दावा नहीं किया जा सकता। कल की तुलना में आज को नया मानने जैसी स्थिति आधुनिकता के साथ नहीं है।"[21] किन्तु आधुनिकता का सम्बन्ध वर्तमान से है और उसकी धारणा का मूलाधार ऐतिहासकि चेतना ही है। इस दृष्टि से आधुनिकता का अर्थविस्तार हुआ है, जो समय से परिबध्द नहीं रह सकता और जिसपर समय का नियंत्रण भी नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए "मध्ययुग के रोमी दार्शनिकों की अपेक्षा अरस्तू अधिक आधुनिक है, शंकराचार्य की अपेक्षा बुध्द का जीवन दर्शन अधिक आधुनिक है और हिन्दी साहित्य में सूरदास की अपेक्षा कबीर अधिक आधुनिक है। अतः आधुनिकता का यह रूप प्रत्येक युगमें बदलता रहता है। "आधुनिक मनुष्य समय की गति के साथ कदम से कदम मिलाता हुआ अपने युग के पूर्ववर्ती मूल्यों से टकराता ही है, अपने समय से भी टकराता है। इस तरह "आधुनिक" शब्द काल. विशेषण और नूतन दृष्टि (विचार) के अर्थ का ध्योतक है।"[22] आधुनिक शब्द का अर्थ-विस्तार इतना हुआ है कि आज मानव का जीवन एकदम उलझा हुआ, जटिल और कठिन बन गया है, क्योंकि मानव हर समय अतीत की अपेक्षा वर्तमान में रहना अधिक पसंद करता है। इसी कारण उसके द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्योंका विघटन हो रहा है और उसने आधुनिकता की बात प्राचीनतासे बिल्कुल हटकर की है। आज का मानव अपने अस्तित्त्व के बारे में अधिक सोच - विचार करता है। वह अपने अस्तित्त्व की रक्षा के लिए प्रयत्नशील है। अपने अस्तित्त्व के लिए पुराने मूल्यों को तोड़कर नये मूल्यों की प्रतिष्ठापना मे सजग है। यह नयी मूल दृष्टि " आधुनिकता" है। अतः "दार्शनिक तर्क की दृष्टि से आधुनिकता के दर्शन का नाम अस्तित्त्ववाद है और अस्तित्त्ववाद के व्यावहारीक रूप का नाम आधुनिकता है।"[23]

वर्तमान युगमें "आधुनिकता" का अर्थ " वैज्ञानिक" दृष्टिसे भी ग्रहण किया जा रहा है। अतः यह आधुनिक शब्द का अर्थ - विस्तार ही है। क्योंकि वैज्ञानिक जीवन - दृष्टि समकालीन युग के लिए आवश्यक है और आधुनिकता के बोध के लिए वैज्ञानिक दृष्टि को भी स्वीकार करके चलती है।" युगीन परिपार्श्व में ही वैज्ञानिक दृष्टि का महत्त्व है, उससे कटकर उसका मूल्य शून्य है। वैज्ञानिकता के समान आधुनिकता भी परीक्षण को समानता प्रदान करती है।"[24] जिसकी दृष्टि श्रेष्ठ दिशा की ओर ले जाने का प्रयास करती है, क्योंकि विज्ञान का नियम संघटन है, विघटन नहीं। विज्ञान की इस नवीन दृष्टि ने निस्संदेह ही विजय प्राप्त की हो और विश्वास के स्थानपर परीक्षण, श्रध्दा के स्थानपर तर्क और आस्था के स्थानपर विश्लेषण को महत्त्व दिया है। डॉ. उर्मिला मिश्र का कथन उचित है — " विज्ञान मनुष्य के मन मस्तिष्क में विधि-निषेध सम्बन्धि कार्यों, विचारों, मूल्यों के प्रति प्रश्नों को उत्पन्न करता है। व्यक्ति प्रचलित मूल्यों, सभ्यता और सम्बन्धों की आलोचना करता और अपनी रचनात्मक कल्पना द्वारा वैज्ञानिक पध्दति से नवीनीकरण करता है।"[25] इसमें संदेह नहीं है कि

वैज्ञानिकता का उपयोग सत्ता संघर्ष के लिए प्रयोगीत किया जाता है उसमे सार्वभौम प्रलय की सम्भावना निहित है क्योंकि समय - समयपर आनेवाले राजनीतिक भूकम्प अतिशय संवेदनशील व्यक्तियों के मन में यह भय भी उत्पन्न कर देता है कि खतरा शायद काफी नजदीक है। अतः खतरे की आशंका गलत नहीं है, किंतु इसका प्रयोजन सावधान करता है, हताश और कर्तव्यमूढ करना नहीं।

अतः "आधुनिकता" शब्द का अर्थविस्तार काफी असीमित हद तक हुआ है और हो रहा है क्योंकि आधुनिकता की दृष्टिसे नवीन के प्रति आकर्षण स्वाभाविक ही है। परन्तु "आधुनिक होना आधुनिक मनुष्य का एकाधिकार नहीं रह जाता क्योंकि आधुनिक मनुष्य (अर्जुन, कौटिल्य, कबीर) भी हुए हैं और इसके पहले भी आधुनिक युगों की कौंध हुई है।"[26] इस दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि जैसी स्थिति होती है वैसे ही बने रहना आवश्यक है, इसी भावना के विरोध में आधुनिकता का विकास होता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमानको भविष्य के अनुकूल बनाकर, उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और उसे आधुनिकता के नाम से अपनाता है। आधुनिकता परम्परा को प्रवाह के रूप में स्वीकार करती है, जो निरंतर अग्रसर रहती है और जिसमें परिवर्तन अनिवार्य हैं, जीर्ण पुरातन का त्याग, संशोधन तथा पुनःमूल्यांकन की पध्दति से नव- नव रूपों के विकास की आकांक्षा, वैचित्र्य और नवीनता के प्रति आकर्षण आधुनिकता के सहज अंग है। इसी तरह रूढियों के प्रति विद्रोह और नवजीवन के विकास के लिए प्रगति के प्रति आग्रह आधुनिकता में अनिवार्य है।

आधुनिकता : स्वरुप - निर्धारण

(अ) आधुनिकता और इतिहास - बोध

परम्परा की तरह आधुनिकता के स्वरुप निर्धारण में सर्व- प्रथम इतिहास - बोध का विचार करना आवश्यक है। यह ठीक है कि इतिहास बहुत बडा है जिसके अन्तर्गत सभी घटनाएँ समेटी होती है। इसी कारण इतिहास को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि हर इक नये मूल्य प्राचीन मूल्यों की टूट - फूट से बने होते है, इस टूट-फूट में नए को हमेशा पुराने मूल्यों की जानकारी रहती है, जो आवश्यक है। किन्तु यह बात अलग है कि कुछ मूल्यों का महत्त्व बढकर वे प्रतिष्ठित बन जाते हैं तो वह पुराने को भूल जाते है या अपनी विकास प्रक्रिया में आगे बढ जाते है। आधुनिकता की माँग के अनुसार मूल्य परिवर्तित होते रहते हैं। किन्तु आधुनिकता को इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि "इतिहास मानव द्वारा निर्मित, आकांक्षित विचारित वह यथार्थ अनुभूति है जो कालक्रम से बँधकर

इतिहास बन जाता है। मनुष्य अपने अतीत को वर्तमान में ढालकर वर्तमान को भविष्य के अनुकूल बनाकर, उसे सामाजिक व्यवस्था का रूप देता है और उसे आधुनिकता के नाम से अभिहित किया जाता है।"[27] परन्तु इतिहास को परखना उसके अन्तर्गत दिखाई नहीं देता, जो पीढी पर पीढी की गुलामियों में बंधा हुआ है। वह स्वयं को चाहे कितना ही "आधुनिक" समझता रहे परन्तु आधुनिकता के आन्तरिक गुण उसमें उभरते नहीं इसलिए इतिहास बोध को आधुनिकता के सन्दर्भ में जान लेना आवश्यक है क्योंकि इतिहास के बिना हम नयी बात कह नहीं सकते। किसी भी नयी स्थापना के लिए गुंजाइश तभी होगी जब कि हम पुराने को पूरी तरह से भोग लें। उन पुराने मूल्यों को पूरी तरह से भोगने के बाद वैज्ञानिक दृष्टि से प्रेरित होकर मनुष्य व्यवहार के क्षेत्र में इसका निषेध करने लगे, परलोक की तुलना में लोक को सत्य मानने का विश्वास इतिहासविरोधी है। इस विरोध को " प्रत्यय" आधुनिकता का मूल तर्क है। देवता के स्थान पर "पूर्ण मनुष्य" की कल्पना केवल आधुनिक नहीं है, आधुनिकता भी है। जो मूलतः इतिहास की धरा पर स्थित रहते हुए बुध्दि के निकष पर खिंचती हैं। वह भावना को महत्त्व न देते हुए उसके विरोधी तत्त्वोंके बल प्रदान करती है। परन्तु उसका बीज इतिहास के प्राणों में छिपा रहता हैं क्योंकि प्रत्येक युग का समाज अपने समय की आधुनिक प्रवृत्तियों से संघर्ष करता रहा है। अतः हर एक युग अपने समय में आधुनिक ही होगा जिसकी कोई न कोई समस्या होगी और उस समस्या के समाधान के लिए नये रास्तों का अन्वेषण किया गया हो। इस दृष्टि से बौध्दकाल आज प्राचीन बन गया है किन्तु वह अपने युग में निश्चित ही आधुनिक रहा होगा। इस तरह प्रत्येक युग आधुनिक मनुष्य को जन्म देता है, क्योंकि वह स्वयं अपने समय में आधुनिक रहा है। स्वभावतः हर एक आदमी इतिहास की अपेक्षा वर्तमान को चाहता है क्योंकि उसकी वर्तमानकालीन समस्याओंका समाधान इतिहास से नहीं हो सकता। इसी कारण वह ऐतिहासिक मूल्यों को नये मूल्यों में परिवर्तित करने की कोशिश करता है और "जब नये मूल्य पुराने मूल्यों से टकराते हैं, तो नूतन या तीसरे मूल्य का जन्म होता है। तीसरे मूल्य का नाम ही आधुनिकता है"[28] इस बात को निम्नलिखित आरेख द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है — तीसरे मूल्य (आधुनिकता)

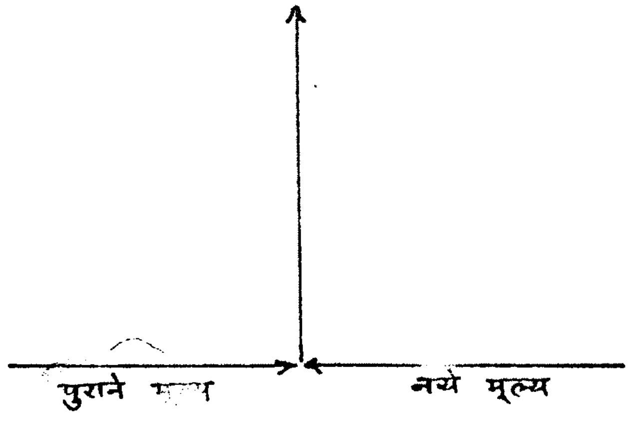

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इस तरह आधुनिकता को पूरी तरह से समझने के लिए इतिहास को परखना आवश्यक है क्योंकि आधुनिकता का जन्म ही इतिहास की कोख से होता है।

(आ) आधुनिकता और यथार्थ

आधुनिकता मानव जीवन के लिए यथार्थ है और यथार्थ क्षण - प्रतिक्षण नई नई प्रक्रिया से परिवर्तित होते हुए गुजरता रहता है। यथार्थ की इस गतिशीलता को ही आधुनिकता पूर्ण रूप से स्वीकारते हुए चलती है। जिसके कारण बदलते परिवेश से मानव की नए अनुभवों के प्रति स्वास्थ दृष्टि उपजती है। परिवर्तन मानव जीवन के हर क्षेत्र में केवल शंका और विरोध की नजर से न देखते हुए सामाजिक और जीवन सन्दर्भों में उनकी सार्थकता की तलाश करता हुआ उन्हें उदार दृष्टि देता है। जो परिवर्तन स्वयं मानव चाहता है या करता है क्योंकि आज "व्यक्ति का स्वाभिमान उसकी सत्ता में, उसका व्यक्तित्व आत्मपरक दृष्टि में और उसका अनुभव उसकी अभिव्यक्ति में जाहिर होता है। और इस अद्वितीयता को स्वीकार करना, आधुनिक भावबोध को स्वीकार करना है।"[29] इसलिए आधुनिकता को भविष्य के जन्म की पीडा माना जाता है जो अभी तक अपनी आँख भी खोल न सका। अत: वर्तमान और भविष्य की मध्यस्थ निर्धारित मन:स्थिति आधुनिकता है। जो यथार्थ की भू - पर स्थित होकर विकास और गति का केन्द्र मनुष्य कोही मानती है। इससे यह भी सिध्द होता है कि मानव के होनेवाले विकास के प्रति आधुनिकता विशेष आस्थावान है। इस प्रक्रिया में वह पुराने मूल्यों को अपने से पृथक कर देता है। अत: आधुनिकता यह एक ऐसी परिधि है जो एक युग के मानसिक धरातल को नवीन मान्यताओं और उपलब्धियों के आधार पर काट-छाँटकर नवीन रूप में प्रस्थापित करती है। जिसका मूलाधार मानवतावाद माना जाता है। हम देखते है कि इतिहास में मानवीय दृष्टिकोण को आधार बनाकर पुरातन एवं नवीन में संघर्ष होता है। अमानवीय तत्वों से मुक्त होने के कारण ही दास - प्रथा, साम्प्रदायिकता, जातिवाद आदि प्रवृत्तियों का विरोध होता है। अत: आधुनिकता की सार्थकता के लिए मानवतावादी विचारों की आवश्यकता है। अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलन्द करना आधुनिकता के अन्तर्गत आता है । साथ ही साथ मानवता के भविष्य - निर्माण के संघर्ष में हम और भी सचेत रहकर वर्तमान परिस्थिति को सुधारे, और पीडित मानव के साथ एकात्म होकर उसके मुक्ति की उपाय योजना करें, आदि। "यथार्थ" जीवन की वास्तविकता का चित्रण करता है, इसलिए इसमें अतीत और भविष्य की अपेक्षा वर्तमान का ही चित्रण अधिक होता है। कार्ल-मार्क्स मानवतावादी चिन्तक था। पीडित, शोषित मानव के प्रति उसके मन में आस्था थी। मार्क्स की चिन्तन प्रणाली "मार्क्सवाद" नाम से प्रसिध्द है जिसमें "आधुनिकता" स्पष्टरुपसे साकार हुई हैं। "मार्क्सवाद"

यथार्थ की आधुनिक चिन्तन सरणी है, सद्यःस्थिति का दस्तावेज है। "मार्क्स और फ्रायड को यथार्थ वादी चिन्तन – सरणी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।"[30] यथार्थता सद्यःकालीन परिस्थिति का बोध देती है अतः वह "आधुनिकता ही है।

(इ) आधुनिकता और मूल्य दृष्टि

मूल्य शब्द वस्तुतः नीतिशास्त्री "वैल्यू" का पर्यायवाची है। अर्थशास्त्र में "बाजारदर" के अर्थविनिमय के एक आवश्यक प्रतिमानके अर्थ में प्रयुक्त होता है। वास्तव में मूल्य शब्द सारे मानवजीवन में किसी न किसी रूप में व्याप्त है। इसका मूल कारण यह है कि मानव जीवनका भौतिक आध्यात्मिक – दोनों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सामान्यतः "मूल्य" को नीति के क्षेत्र में प्रचुर मात्रा मे देखा गया है, अर्थनीति, समाजनीति, न्यायनीति आदि बात मूल्य से सम्बन्धित है। मूल्य मानव निर्मित है। मानव जीवन के परिवर्तन के कारण मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। मूल्य चर्चा में साधारणतः मूल्य परिवर्तन, मूल्य संक्रमण, मूल्य विघटन आदि शब्द प्रयोग किया जाता है। जीवन के परिवर्तन के साथ मूल्य भी परिवर्तित होते हैं अर्थात मूल्य परिवर्तन एक स्वाभाविक परिवर्तन है। "मूल्य संक्रमण" शब्द प्रयोग विशिष्ट है। सामाजिक मूल्योंके ध्वस्त होने और नवीन मूल्यों के पुनरस्थापित होने के बीच की स्थिति मूल्य-संक्रमण की स्थिति है। "मूल्य विघटन" शब्द प्रयोग में "मूल्य" और "विघटन" दो शब्द निहित हैं। अतः मूल्य-विघटन शब्द प्रयोग में यह अर्थ अभिप्रेत है कि परम्परागत मूल्यों को विनाश ही मूल्य विघटन है। मानव जीवन में जो परम्परागत मूल्य होते हैं। उनका पूर्णतया विनाश हो जाता है और उनकी जगह नये मूल्यों की स्थापना होती है। डॉ. गजानन सुर्वे ने मूल्य परिवर्तन, मूल्य संक्रमण और मूल्य विघटन को इस प्रकार विशद किया है, "विवाह को संस्कार के रूप में स्विकार करना "परम्परागत मूल्य" है, उसे प्रसंगवश करार का रूप देना "मूल्य परिवर्तन" है और विवाह की पूर्णतया नकारना तथा उसकी जगह स्वच्छद प्रेम या मुक्त आसंग को मान्यता देना "मूल्य विघटन" ही है।[31] वास्तव में जीवन मूल्यों के प्रति मनुष्य की परिवर्तित नयी दृष्टि ही आधुनिकता है। जो इतिहास और परम्पराको कुछ मात्रासे लाँघकर आगे बढती है। मनुष्य वर्तमान में ही जीता है अतः अपने वर्तमानके प्रति तीव्रतम सजगता आधुनिकता का केन्द्रीय तत्त्व है। "मूल्य के रूपमें विभावित आधुनिकता इतिहासकी प्रक्रियाका अद्यतन चरण है।[32] कभी – कभी आधुनिकता की सार्थकता नवीन मूल्यों के लिए मानवतावादी बन जाती हैं क्योंकि उसके अन्याय के खिलाफ आवाज उठाया जाता है, साथ ही मानवता के लिए वर्तमान स्थिति को सुधारने के उपाय भी व्यक्त किए जाते

है, तो कभी भविष्य – निर्माण के संघर्ष के लिए आधुनिकता दलचिल रहती है। इस प्रकार आधुनिकता में जीवन – मूल्य –दृष्टि समादृत है।

(ई) आधुनिकता और समसामयिकता

आधुनिकता समसामयिकता की पर्याय नही है। किन्तु कुछ लोग सम – सामायिकता के सन्दर्भ में आधिुनिकता के साथ सम– सामायिकता के प्रश्न को उठाना स्वाभाविक है क्योंकि "आधुनिकता के परिपार्श्व में जिस संवेदना की चर्चा की जाती है वह पर्याप्त सीमा तक सम – सामायिकता में भी दृष्टिगत होती है।"[33] किन्तु समसामायिकता से आधुनिकता अधिक व्यापक है। समसामायिकता में जीवन के प्रति क्रियाशील होने का भाव दिखाई देता है मगर आधुनिकता में जीवन्त तत्त्व की पुष्टि की जाती है।" इससे स्पष्ट है कि आधुनिकता का आयाम विस्तृत है और समसामायिकता की सीमा संकीर्ण और संकुचित । आधुनिकता एक ऐतिहासिक विश्लेषण है जो हमें देशकाल का बोध देता है, समसामायिकता देशकाल के बोध के साथ सक्रियता की भी पुष्टि करता है।"[34] प्राय: सभी साहित्यकार सम – सामायिक जीवन के स्त्रोत में बहते हैं वे तत्कालीन सामाजिक कुव्यवस्था को देखकर दु:ख व्यक्त करके उसे अपने साहित्य में चित्रित करना ही उनका "रचनात्मक संघर्ष" है। किन्तु आधुनिकतावादी लेखन सारे विश्व को अंग बनाता हुआ अतीत से जुडकर वर्तमान में रहते हुए भी भविष्य से अपना नाता जोडता है। इस तरह जो व्यक्ति आधुनिक विचार शैलीवाला है वह समसामायिक तो है ही पर समसामायिक व्यक्ति आधुनिक विचार शैली का होना ही चाहिए, ऐसी कोई आवश्कता नहीं है। किन्तु आधुनिक भाव – बोध के बाहुल्य का साक्षात्कार और उसका अनुभव बिन समसामायिकता के संभव नहीं है। समकालीन या समसामायिकता व्यापक स्थिति का आयाम है जो देश – काल का बोध देता है। समसामायिक जीवन की विषमताओं के प्रति बौध्दिक दृष्टि ही आधुनिक युग बोध की आधार भूमि है। आधुनिकता मूल्य नहीं दृष्टि है जिसका विकास भविष्य की सम्भावनाओं को ध्यान में रखकर होता है इसलिए समसामायिकता और आधुनिकता में अन्तर बना रहता है। अत: आधुनिकता एक विशेष जीवन दृष्टि है, जो समसामायिक सभ्यता, संस्कृतिके माध्यम से अपने आपको व्यक्त करती है और उसमें भविष्योन्मुख होती है।

समसामयिकता में वर्तमान विद्यमान रहता है। वर्तमान का कभी अंत नहीं होता क्योंकि आज जो वर्तमान है वह कल अतीत बनेगा मगर आधुनिकता की दृष्टि से कल का वर्तमान, वर्तमान ही रहेगा क्योंकि "आधुनिक मनुष्य समय की गति के साथ कदम से कदम मिलाता हुआ अपने युग

के पूर्ववर्ती मूल्यों से टकराता ही है, अपने समय से भी टकराता है। इस तरह आधुनिक शब्द काल विशेषण और नूतन दृष्टि (विचार) के अर्थ का ध्योतक है।"[35] फिर भी वर्तमान का प्रश्न आधुनिकता के साथ उठाया जाता है क्योंकि वह आधुनिकता का युगबोध करता है जिसमें मानव का जीवन गतिमान होकर दौड़ रहा है, इसका अनुभव वर्तमान में सहज ही होता है। उस गतिमान जीवन में वह अत्यन्त सूक्ष्म मूल्यों को भी आत्मसात करता है जो उसकी दृष्टि से आधुनिक होते है। हर एक मानव किसी न किसी अंश में वर्तमान युग का अनुभव करता है । जो व्यक्ति वर्तमान से हटकर रहना चाहता है वह आधुनिकता की ओर चलते हुए भी वर्तमान युग में अपना स्थान निश्चित नहीं कर सकता। आधुनिकता की दृष्टि से जिन मूल्यों की चर्चा की जाती है उसकी सीमा पर्याप्त रूप से वर्तमान युग में स्पष्ट होती है, किन्तु यह समजना गलत है कि वर्तमान युग और आधुनिकता अलग-अलग प्रक्रिया है वस्तुतः वह दो प्रक्रिया मूलतः एक ही है क्योंकि आधुनिकता वर्तमान युगमें ही स्पष्ट होती है। इसमें संदेह नाहीं है कि मानव वर्तमान युग में स्थित होकर भी आधुनिकता को शिघ्र – गतिसे अपना सकता है मगर वह आधुनिकता में स्थित रहकर भी वर्तमान का उतने आसानीसे स्वीकार नहीं कर सकेगा क्योंकि प्रत्येक युग में तत्कालीन मूल्य आधुनिक ही होते हैं। मगर वर्तमान युगमें जो पहले आधुनिक थे वह प्राचीन बन जाते हैं, जो वर्तमान युग में मूलतः अपना स्थान आधुनिकता में स्पष्ट करते हैं शायद उसकी यह आधुनिकता कल के वर्तमान में रहेगी या नहीं यह कहा नहीं जा सकता। क्योंकि वर्तमान युगमें मानव संघर्ष से सशक्त बनकर नये मूल्यों को स्वीकार करता हुआ चलता है, जिसका दायित्व उसके औचित्य की रक्षा करते हुए आधुनिकता से सम्बन्ध रखने की भूमिका अदा करता है। उद्देश्य की दृष्टि से आधुनिकता का उद्देश्य विस्तृत होता है तो वर्तमान का उद्देश्य संकुचित रहता है। अतः वर्तमान युगमें मानव जो जीवन के हर क्षण में प्रगतशील रहता है, वह उसका मूलभाव है, साथ ही साथ भविष्य की दृष्टि से अलग हटकर स्थितियों के प्रति सहमत होना है, इसी कारण आधुनिकता के विकास के लिए वर्तमान युग महत्त्वपूर्ण है।

<u>परम्परा और आधुनिकता : पारस्परिक सम्बन्ध</u>

आज परम्परा का सम्बन्ध आधुनिकता से जोडा जाता है जो अनिवार्य है क्योंकि वर्तमान पीढी अपने समकालीन मूल्यो को ग्रहण करती है और वही मूल्य, वह पीढी आनेवाले पीढी को देती है। इस प्रवाह में उन मूल्यों का मूल रूप ज्यों का त्यों नहीं रहता, उसका कटा-छँटा रूप आनेवाले पीढी को मिलता है। इस संक्रमण प्रक्रिया में उस मूल्य के पुराने विचार नये संदर्भ में बदलकर

परिवर्तित होते है। इस तरह पुराने मूल्य "परम्परा" के नाम से पहचाने जाते हैं और उसका कटा – छँटा नया रूप "आधुनिकता" में आ जाता है। परन्तु परम्परा और आधुनिकता को पूरी तरह से अलग – अलग मानना ठीक नहीं है। क्योंकि "आधुनिकता ऐसा चतुर इंजिनियर है जो परम्परा की कच्ची पुडिया को नवीन पुडिया में बदल देता है। दूसरे शब्दों में आधुनिकता परम्परा के प्रतीयमान अर्थों को स्पर्श करती है, उसे माँजती है, खरोंचती है, और परिमार्जित कर उसमें से चमत्कारिता तथा नूतन अर्थवत्ता को जन्म देती है।"[36] इस प्रकार परम्परा आधुनिकता को जन्म देती है। परम्परा का ही नया रूप आधुनिकता से स्पष्ट होकर समाज में अपना स्थान पा लेता है। वैसे तो पारम्पारिक मूल्य अविघटीत रूपसे अपने युग में आधुनिक ही होता है क्योंकि हर युग अपने तत्कालीन समय आधुनिक ही होता है, जिसे मानव ने आत्म – साक्षात्कार के क्रम में स्वतंत्र होकर एक ने दूसरे को दूसरे ने तीसरे को दिया हुआ क्रम है जो आगे चलकर वर्तमान युग में आधुनिकता बन जाता है। अतः यह मानना आवश्यक है कि परम्परा और आधुनिकता एक – दूसरे की विरोधिनी नहीं है, बल्कि पूरक है। वैसे तो परम्परा स्वयं परिवर्तनशील है और आधुनिकता परम्परा का परिवर्तित रूप है। जो मूलतः एक परम्परा ही होती है और जिसका समाज स्वागत करता है, क्योंकि "परम्पराएँ समाज विशेष की पहचान कराती है। कुछ परम्पराए युग – युग की होती है। हाँ, उनके जडतत्व का, गतितांश का परिष्कार करना होता है तभी स्वस्थ परम्परा शुरू होती है। बदली हुई परिस्थितियाँ युग के यथार्थ को सम्यक रूपेण अभिव्यक्त करने के लिए नई भाषा, शिल्प को अपनाना होता है।"[37] इसी तरह "यह आधुनिकता प्रत्येक काल में प्राप्त हो सकती है। रूढियों का विरोध, परम्परा की जड प्रवृत्ती को नकारना है, और यह अस्वीकृति ही परम्परा में विघटन, संशोधन, परिवर्ध्दन एवं परिवर्तन का दावा करती है। एक रूप से देश – काल की यथार्थ परिस्थितियों की परिधि में व्याप्त आधुनिकता जीवन्त परम्परा का पर्याय बन जाती है।"[38] इस तरह परम्परा एक जीवन्त प्रक्रिया है जो निरन्तर क्रियाशील रहते हुए उचित समयपर अपने परिवेश का संग्रह त्यागकर आधुनिकता का रूप ग्रहण करती है।

परम्परा नविनता या परिवर्तनिता की विरोधी नहीं है बल्कि वह निरंतर गतिशील रहती है और विकासशील मानवीय भावनाओं से सम्पृक्त होती है। जिस परम्परा को समय का अवशिष्ट कहा जाता है वह मूलतः इतिहास की सच्चाई होती है। वह प्रगति का स्मारक ही नहीं उसका प्रेरक भी है। इस दृष्टि से परम्परा और आधुनिकता दोनो भी गतिशील है। उनमें अंतर इतना ही है कि परम्परा की तुलना में आधुनिकता के गतिशीलता में ठहराव का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इसका कारण यह है कि आधुनिकता का सम्बन्ध मानव हित से है। " आधुनिक रचनाकार परम्परा में जीता नहीं, उसकी व्याख्या करता है – परिवेश और आधुनिकता संचेतना के सन्दर्भ में वह परम्परागत बातों का पुनरीक्षण और पुनर्मूल्यांकन करता है। उल्टे वर्तमान के विश्लेषण और अर्थबोध के लिए परम्परा का उपयोग करता है।"[39] इस प्रकार परम्परा को आधुनिकता से अलग नहीं किया जा सकता।

अतः परम्परा और आधुनिकता का सम्बन्ध अटूट है, उन्हें एक दूसरे से अलग किया नहीं जा सकता क्योंकि आज जिसे हम परम्परा समझते है वह अपने समय में आधुनिक ही होगा और जिसे हम आधुनिकता समझते हैं वह कल परम्परा बननेवाली है। इस तरह आधुनिकता एक चेन की तरह होती, जिसकी कडियाँ एक – दूसरे से जुडी हुई हैं, दूर– दूर तक अनवरत काल में चली जाती है। हर कडीका अपना स्वतंत्र वृत्त और क्षेत्र होता है। उसे एक – दूसरे से अलग किया नहीं जा सकता क्योंकि वह हर इक कड़ी आधुनिकता भी होती है और परम्परा भी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने परम्परा और आधुनिकता के पारम्पारिक सम्बन्ध को बडे ही मार्मिक शब्दों में विशद किया है — "बुध्दिमान आदमी एक पैर से खडा रहता है दूसरे से चलता है। यह केवल व्यक्ति – सत्य नहीं है, सामाजिक संदर्भ में भी यही सत्य है। खडा पैर परंपरा है और चलता पैर आधुनिकता।"[40] आधुनिकता और परम्परा के पारस्परिक सम्बन्ध को आधार – आश्रय को निम्नलिखित आरेखद्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है—

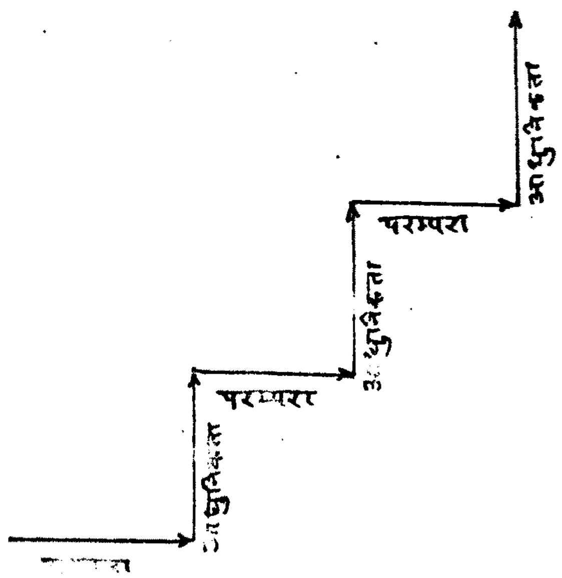

संक्षेप में, बिना परम्पराके आधुनिकता की कल्पना नहीं की जा सकती। आधुनिकता और परम्परा दोनों गतीशील है, दोनों जीवन-प्रक्रिया है, दोनों परस्पर विरोधी नहीं बल्कि पूरक ही हैं।

—

साहित्य में परम्परा और आधुनिकता

कोई भी साहित्यकार अपने युग से प्रभावित होता है और जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव कर पाता है उसका चित्र ही कलात्मक ढंग से अपने साहित्य में साकार करता है। युगचेतना से प्रभावित साहित्यकार साहित्य का स्रष्टा है और उसका साहित्य युगचेतना का वाहक।

साहित्यकार सामान्य मानव की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होने की वजह से वह मानव-जीवन के प्रति अटूट आस्था रखता है और तभी साहित्य का सृजन सम्भव होता है। महादेवी वर्मा का कथन उचित है - "माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से सन्तान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋतु के बिना अँकुर को विकास नहीं दे सकती साहित्यकार भी उसी प्रकार गम्भीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे सकता।"[41] फलतः साहित्यकार अपनी सूक्ष्म अनुभूति, परिष्कृत बुध्दि, व्यापक कल्पना तथा अनुपम शैली द्वारा साहित्य का सृजन करता है। सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा साहित्यकार की अनुभूति तथा अभिव्यक्ति अधिक सूक्ष्म और अधिक व्यापक होती है। अतः मानव - जीवन - मूल्यों के समय - समय पर होनेवाले परिवर्तनों की ओर वह सदैव सजग और सतर्क रहता है और उन जीवन - मूल्यों को अपने साहित्य में चित्रित करता है। किसी भी साहित्यकार की अपनी जीवन - मूल्य - दृष्टि होती है और इसी कारण साहित्य में "परम्परा" और "आधुनिकता" दोनों को किसी न किसी अनुपात में चित्रित किया जाता है। "परम्परा" और "आधुनिकता" का वास्तविक सम्बन्ध पिता - पुत्र का होने के कारण आजकल किसी भी साहित्य में न केवल "परम्परा" का चित्र दिखाई पड़ता है, न "आधुनिकता" का। हाँ इतना सही है कि आज का साहित्यकार अपने साहित्य में "परम्परा" की नींवपर "आधुनिकता" का भव्य - भवन खड़ा कर देता है और सजग तथा संवेदनशील पाठकों को अपनी और आकृष्ट करता है।

साहित्य में "परम्परा" के हिमायती विख्यात समीक्षक टी.एस.इलियट का कथन है कि " परम्परा" एक अविच्छिन्न प्रवाह है जो अतीत के साहित्यिक सांस्कृतिक दाम के उत्तम अंश से वर्तमान को समृध्द एवं [illegible] बनाती है और भविष्य को पथ प्रशस्त करती है। साहित्यकार को इतिहास बोध का ध्यान रखना पडता है क्योंकि इतिहास बोध "परम्परा" का अभिन्न अंग है। "किसी कवि या कलाकार की पूर्ण सार्थकता केवल अपने - आप में नहीं होती। उसकी सार्थकता, उसकी परिशंसा दिवंगत कवियों और कलाकारों की सापेक्षता में ही होती है।"[42] अतः यह स्पष्ट है कि आज का साहित्यकार "परम्परा" का वांछित या उत्तम अंश ग्रहण कर साहित्य में "आधुनिकता" को अभिव्यक्त करता है।

अगर हम आधुनिक हिंदी साहित्य की ओर ध्यान देते हैं तो हमें मालूम पडता है कि आज के साहित्यकारोंने वाल्मीकि की "रामायण" या व्यास के "महाभारत" के कुछ पारम्परिक अंशों को चुनकर उन्हें आधुनिक साहित्य में वर्तमान – जीवन – सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है, जो उन कवियों या लेखकों की उनके साहित्य में व्यक्त "आधुनिकता" ही है। उदा. श्री नरेश मेहता के "संशय की एक रात" में वाल्मीकि प्रणीत राम का चरित्र – चित्रण "प्रज्ञा – पुरुष" तथा "संशयबोध" के रूप में आधुनिकता ही है, यथा—

"यदि मैं मात्र कर्म हूँ
तो यह कर्म का संशय है।
यदि मैं मात्र क्षण हूँ
तो यह क्षण का संशय है।"[43]

श्री नरेश मेहता की दूसरी प्रसिध्द काव्यकृति "महाप्रस्थान" महाभारत के प्रधानिक पर्व पर आधारित होकर भी उसमें चित्रित युधिष्ठिर, द्रौपदी आदि पात्र आधुनिक युगबोध के ही साक्षी है और इन पात्रों के माध्यम से कवि की वाणी में "आधुनिकता" गूंज उठी है। आज का साहित्यकार वर्तमान में जीता है लेकिन कभी – कभी उसका ध्यान अतीत की ओर दौडता है और वह इतिहास – बोध को ध्यान में रखकर " परम्परा" का आधार लेकर " आधुनिकता" को अंकित करता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में चित्रित राम, कृष्ण, बुध्द आदि वास्तव में आज "मिथक" बन गए हैं और हिन्दी साहित्यकारों ने इन मिथकों को "आधुनिकता" में साकार किया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में "मोहन राकेश" के "आषाढ का एक दिन" और "लहरों के राजहंस" में, लक्ष्मीनारायण लाल के "सूर्यमुख", "कलंकी" ,"मिस्टर अभिमन्यु", "एक सत्य हरिश्चन्द्र" में, सुरेंन्द्र वर्मा के "द्रौपदी" और "सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक" तथा "आठवाँ सर्ग" में, मिथक की नूतन उद्भावनाओं का अंकित किया गया हैं।

इतिहास – बोध के साथ – साथ आज का साहित्यकार मानव जीवन को अनेक कोणों से देखता – परखता है और उसीको अपने साहित्य में समादृत करता है। आज का साहित्यकार कार्ल – मार्क्स की चिन्तन प्रणाली से अर्थात मार्क्सवाद से प्रभावित हुआ है। साथ ही साथ, आज का साहित्यकार लोक जीवन से भी प्रभावित होकर उसकी नयी व्याख्या करने में अग्रसर है। अत: आज के साहित्य में एक साथ हमें मार्क्सवाद, लोकजीवन आदि का चित्रण दिखाई पडता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य भी इस बात का अपवाद नहीं है। हिन्दी के प्रगतिवादी साहित्यकारो में प्रेमचंद, यशपाल, राहुल

सांस्कृत्यायन, गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन, सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला", सुमित्रानंदन पंत, शिवमंगल सिंह "सुमन" आदि का उल्लेख किया जा सकता है। प्रेमचंद का विख्यात उपन्यास "गोदान" प्रगतशील चिन्तन का उत्कृष्ट उदाहरण है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में मोहन राकेश के "आषाढ का एक दिन" "आधे – अधूरे", से "चन्द्रगुप्त विद्यालंकार के "न्याय की एक रात" विष्णु प्रभाकर के "युगे युगे क्रांति" अमृतराय के "चिन्दियों की एक झालर" डॉ. शंकर शेष के "घरौंदा" आदि नाटकों में प्रगतशील चिन्तन की अभिव्यक्ति सामाजिक –आर्थिक धरातल पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों मे लक्ष्मीनारायण लाल के "अँधा–कुआँ", "कलंकी" "नाटक तोता – मैना", ज्ञानदेव अग्निहोत्री के "माटी जागी रे" "नेफा की एक शाम" आदि नाटकों में लोक जीवन की अच्छी झाँकि मिलती है।

हिन्दी के आधुनिक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में जिस प्रगतिशील चिन्तन और लोकजीवन को अभिव्यक्त किया है वह वास्तव में "आधुनिकता" ही है।

आज का साहित्यकार फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोवैज्ञानिकों से प्रभावित होकर भी साहित्य का सृजन करता है। हिन्दी के मनो – वैज्ञानिक उपन्यासकारों और कहानीकारों में अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। अज्ञेय के "शेखर एक जीवनी" "नदी के द्वीप" जैनेन्द्र कुमार के "सुनीता", "त्यागपत्र" "कल्याणी", इलाचन्द्र जोशी के "संन्यासी" "परदे की रानी" "प्रेत और छाया" आदि उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में उपेन्द्रनाथ अश्क का "अंजोदीदी", मोहन राकेश के तीनों नाटक — "आधे – अधूरे", "आषाढ का एक दिन" "लहरों के राजहंस" विष्णु प्रभाकर के "डॉक्टर" "टूटते – परिवेश", लक्ष्मीनारायण लालके "रातरानी", "दर्पन","मिस्टर अभिमन्यु", सूर्यमुख, सुरेन्द्र वर्मा के "द्रौपदी" "सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, "आठवाँ सर्ग", डॉ. शंकर शेष के "खजुराहों का शिल्पी", "फंदी", आदि नाटकों में पात्रों के मनोविज्ञान – चित्रण के सफल उदाहरण माने जा सकते हैं। इन सभी नाटककारों ने पात्रों के चरित्र –चित्रण में खंडित – व्यक्तित्त्व (Split-Personality) को प्रधानता दी है। पात्रों के चरित्र – चित्रण की यह एक नई प्रणाली है।

आज का साहित्यकार सजग शिल्पी है, अतः शिल्प में भी नये– नये प्रयोग करने की उसकी दृष्टि "आधुनिक" ही है। कथावस्तु पात्र और चरित्र –चित्रण, भाषा-शिल्प, संवाद –योजना, मंचीय – विधान, आदि में साहित्यकारों ने नय – नये प्रयोग किए हैं। उसी तरह स्वातंत्र्योत्तर ~~साहित्यकारों~~ नाटककारों में मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, सुरेन्द्रवर्मा, रमेश बक्षी ,

मुद्राराक्षस, धर्मवीर भारती, भारतभूषण अग्रवाल, हमीदुल्ला आदि ने अपने नाटय साहित्य में नव्य नाटय - शिल्प को अपनाया है। यह नव्य नाटय - शिल्प ही "आधुनिकता" की पहचान है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि के आधारपर जगदीशचन्द्र माथुर के प्रतिनिधि नाटकों में "परम्परा" और "आधुनिकता" को [illegible] करने का हमारा प्रमुख लक्ष्य है।

—

सन्दर्भ – सूची

1. मानक हिन्दी कोश – तीसरा खण्ड – रामचन्द्र वर्मा (सम्पा) पृ. 396 प्र. संस्क.

2. संस्कृत – हिन्दी कोश – वामन शिवराम आप्टे (सम्पा) पृ.577 द्वि.संस्क 1969.

3. मानक हिन्दी कोश – तीसरा खण्ड – रामचन्द्र वर्मा (सम्पा) पृ.396 प्र.संस्क.

4. WEBSTER'S INTERNATIONAL DICTIONARY OF THE ENGLISH LANGUAGE VOL - II P.1525

   1- "The act of delivering into the hands of another; delivery." 2- The unwritten or oral delivery of information, opinions, Doctrines, Practices, rites and customs, from father to sun, or from ancestors to posterity. 4- (a) An unwritten code of law represented to have been given by God to Moses on Sindi."

5. THE READER'S DIGEST GREAT ENCYCLOPAEDIC DICTIONARY, Vol-2, compiled by Oxford University press, p- 935, Ed- 1964.

   Transmission of statements, beliefs, Customs etc. esp. by wolds of mouth or by practis without writing;"

6. Oxford Advanced Learner's Dictionary of Current English- A.S.Hornby P-917 Ed-Ninth Impression 1985.

   "Tradition :-n(u) (handing down from generation to generation of) Opinions, beliefs, Customs, etc; (c) Opinion, belief, Custom etc handed down;

7. मानक अंग्रेजी – हिन्दी कोश – सत्यप्रकाश (सम्पा) पृ.1431, संस्क. 1971.

8. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली खण्ड-9(निबंध : सामंजस्य की खोज: परम्परा और आधुनिकता) डॉ. मुकुन्द द्विवेदी आदि दो [सम्पा.] पृ. 358

9. The Sacred Wood. T.S.Eliot P.49 Ed-1960

"Tradition is a matter of much wider, significance, it cannot be inherited, and if you went you must obtain it great labour."

10. नयी कविता के प्रतिमान– लक्ष्मीकांत वर्मा, पृ. 182.

11. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली खण्ड-9(निबंध:सामंजस्य की खोज परम्परा और आधुनिकता) डॉ. मुकुन्द द्विवेदी आदि दो [सम्पा.], पृ. 369

12. वही, पृ. 361

13. The Sacred wood. T.S. Eliot P. 49 Ed. 1960.

"The historical sense involves a perception, not only of the pastness of the past, but of its presence."

14. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली खण्ड-9(निबंध : सामंजस्य की खोज : परम्परा और आधुनिकता) डॉ. मुकुन्द द्विवेदी आदि दो [सम्पा.] पृ. 362

15. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिला मिश्र. पृ.6, प्र. संस्क.

17. मानक हिन्दी कोश – पहला खण्ड – रामचंन्द्र वर्मा (सम्पा.), पृ. 266, प्र. संस्क.

18. Oxford Advanced learner's Dictionary of Current English A.S.Hornby. P. 544, Ed. Ninth Impression 1985.

"Modern- 1-of the present or recent times~ History eg of the Europe, from 1475 onwards~ langnages;those now spoken and written M ~ English, from the 15th c onwards;~

inventions and discoveries,
2- new and up-to-date ~ metho:s and ideas, a house with ~ convenince. O[n] person living in ~ times."

19. मानक अंग्रेजी – हिन्दी कोश – सत्यप्रकाश (सम्पा), पृ.873, संस्क. 1971.
20. नयी समीक्षा नये संदर्भ,– डॉ. नगेन्द्र, पृ.67, द्वि. संस्क. 1974.
21. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिल मिश्र, पृ.1, प्र.संस्क.
22. वही, पृ.3
23. वही, पृ.5
24. सप्तक त्रय : आधुनिकता और परम्परा – डॉ. सूर्यप्रकाश विद्यालंकार, पृ.28, संस्क. 1980.
25. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिल मिश्र, पृ. 9, प्र. संस्क.
26. आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण – रमेश कुंतल मेघ, पृ. 5
27. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिल मिश्र – पृ. 5. प्र. संस्क.
28. वही – पृ.6
29. वही – पृ.4
30. प्रगतिवादी काव्य – साहित्य – डॉ.कृष्णलाल "हंस", पृ.8, संस्क. 1971.
31. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. गजानन सुर्वे – पृ. 377, संस्क. 1987.
32. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (प्र.सम्पा) पृ.111, संस्क. सवंत् 2020.
33. सप्तक त्रय : आधुनिकता और परम्परा – डॉ. सूर्यप्रकाश विद्यालंकार – पृ.32, संस्क. 1980.
34. वही, पृ.34.
35. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिल मिश्र – पृ.3, प्र. संस्क.
36. वही – पृ.6
37. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा पृ.4–5, संस्क. 1989.
38. सप्तक त्रय: आधुनिकता और परम्परा–डॉ. सूर्यप्रकाश विद्यालंकार पृ.57, संस्क. 1980.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY. KOLHAPUR.

39) आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ.ओमप्रकाश शर्मा, पृ.5, संस्क.1989

40) हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली खण्ड-9(निबंध : सामजस्य की खोज : परम्परा और आधुनिकता) डॉ. मुकुन्द द्विवेदी आदि दो (सम्पा.) पृ. 359

41) महादेवी साहित्य, प्रथम खण्ड – ओंकार शरद (सम्पा), पृ.154, प्र.संस्क.1969

42) The Sacred wood - T.S.Eliot. P.49, Ed. 1960

"No poet, no artist of my art, has his complete meaning alone. His significance, his appreciation is the - appreciation of his relation to the dead poets and artists."

43) संशय की एक रात – श्री नरेश मेहता, पृ.62

***